12. एक त्वरित सूचना प्रणाली

डॉ। अश्विनी कुमार को वाणिज्यिक विभाग के उप महाप्रबंधक (डीजीएम) द्वारा कंप्यूटर आधारित प्रबंधन सूचना प्रणाली (एमआईएस) विकसित करने का कार्य सौंपा गया। विभाग उस समयतक मैनुअल सिस्टम पर काम रहा था। अपनी प्रबंधन शिक्षा समाप्त करके डॉ कुमार कुछ ही दिन पहले उस विभाग में लौटे थे। एक युवा सहकर्मी, जो डॉ कुमार को पहले से जानते थे, मजाकिए लहजे में कहा थे "आप यहां एक प्रभावी कंप्यूटर आधारित सूचना प्रणाली नहीं डिजाइन कर सकते हैं" । डॉ। कुमार इस मजाक को ठीक से समझ नहीं सके, जब तक कि उनको खुद इसका अनुभव नहीं हुआ ।

इस मूल कंपनी ने कुछ साल पहले एक अन्य कंपनी का अधिग्रहण किया था। उसमे सभी स्तरों और कार्यों पर सभी प्रकार के लेनदेन, प्रदर्शन इत्यादिके डेटा/ रिकॉर्ड करने की एक बहुत ही औपचारिक प्रणाली थी, जो उसे उसकी ब्रिटिश सहयोगी कंपनी से विस्तृत विस्तार के साथ मिली थी । मूल कंपनी का रूसी सहयोग था और भाषा कठिनाइयों के कारण एक औपचारिक प्रणाली विस्तृत जानकारी नहीं मिली थी । सूचना प्रणाली बहुत अनौपचारिक और मौखिक थी।

एक श्री योगेश को अधिग्रहीत कंपनी के इंदौर संयंत्र से वरिष्ठ वाणिज्यिक इंजीनियर के रूप में स्थानांतरित किया गया और उनकी नियुक्ति मोटर बिक्री अनुभाग में हुई जहाँ पहले एक वाणिज्यिक इंजीनियर श्री रस्तोगी कार्यरत थे,जो डीजीएम के अतिविश्वसनीय सहायकहुआ करते थे। एक दिन डीजीएम श्री योगेश को बुलाया और पूछा:-

डीजीएम :"मिस्टर योगेश, पिछले महीने मोटर्स के आउटपुट (उत्पादन) क्या है? "
श्री योगेश :"सर, मैं फाइल देखकर कर आपको बताता हूँ।"
डीजीएम :"यह क्या है, आप नहीं जानते? मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता मुझे त्वरित, जीवंत जानकारी वाली सुचना प्रणाली चाहिए। श्री रस्तोगी को बुलाओ। "

श्री रस्तोगी प्रवेश करते हैं

डीजीएम :"श्री रस्तोगी, पिछले महीने मोटर्स की (उत्पादन) क्या है? "
श्री रस्तोगी :(अपनी डायरी के पन्नों को बदलकर देखते हुए), "सर, 24 मोटर थे।"
डीजीएन :"श्री योगेश देखें। मुझे श्री रस्तोजी जैसे कुशल जीवंत कार्यकारी चाहिए। "

श्री रस्तोगी के पास में बैठे, डॉ कुमार ने देखा, जो पेज श्री रस्तोगी देख रहे थे वह कोरा था। श्री रस्तोगी के पास जानकारी हो भी कैसे सकती थी, जब वह अब मोटर्स की बिक्री का काम नहीं देख रहे थे?

डॉ कुमार ने कंप्यूटर आधारित एमआईएस डिजाइन करने के अपने प्रयासों को जारी रखा। कंपनी थर्मल और पनबिजली संयंत्र, मोटर्स, नियंत्रण और औद्योगिक क्रेताओं (customers) के लिए अन्य उपकरण और अवयवों (components) की आपूर्ति करती थी। अवयव और अस्सेम्ब्लीज़ (assembilies) आकार और मूल्य में भिन्न भिन्न होती हैं, कुछ हजार रुपए से लेकर कुछ लाखों रुपए तक। उनकी सालाना आपूर्ति संख्या हजारों में होती थी। डॉ कुमार ने कम्प्यूटर प्रोग्राम तैयार किए, जो उत्पादन विभागों से आंकड़ों को संग्रह करके, प्रत्येक उत्पाद की दरों से क गुणा रके उसका रुपये में मूल्य निकालता था। फिर उन्हें अलग अलग अकाउंट हेड में बाँट कर, एक फॉर्मूले से हर अकाउंट हेड का उस महीने का उत्पादन योग (total) निकाल देता था। साथ ही साथ वह एक और फॉर्मूले से वर्ष के उस महीने तक का योग भी निकाल देता था। फिर माहवार और संचयी उत्पादन के आंकड़ों को बजट के आंकड़ों के पास रख कर उनका विचरण विश्लेषण (variance analysis) भी करके अंतिम रिपोर्ट एक मानक प्रारूप (standard format) में कंप्यूटर से प्रिंट कर देता था।

कंप्यूटर प्रोग्राम का परीक्षण करने के लिए उन्होंने एक कार्यशाला के फोरमैन (workshop foreman) से पिछले महीने के विभिन्न उपकरण और अवयवों के उत्पादन के आंकड़े देने के लिए कहा । फोरमैन ने पूछा, "कौन सा साहब?" डॉ कुमार थोड़ा आश्चर्यचकित हुए और पूछा, "क्या एक से अधिक आंकड़े हैं?" फोरमैन ने उत्तर दिया, "हां साहब, आप वास्तविक चाहते हैं या जिसकी हम घोषणा करने वाले हैं? हर महीने हम पिछले महीने के उत्पादन की घोषणा करते हैं, जो जरूरी नहीं कि वास्तविक ही हो"। डॉ कुमार थोड़ा झिझके फिर कहा "मुझे वास्तविक आंकड़े दें"। जानकारी प्राप्त करने पर उन्होंने अंतिम रिपोर्ट को पूरा किया और डीजीएम को प्रिंट आउट दिया।

डीजीएम रिपोर्ट देखने के बाद काफी नाराज हुए और डॉ कुमार को कहा:

"क्या? पिछले महीने की उपलब्धि बजट का केवल 70% है। मैं इसे कार्यकारी निदेशक के पास नहीं ले जा सकता वह मुझे डाटेंगे। इसे कम से कम 90% बनाने के लिए कुछ करें "।

डॉ कुमार डीजीएम के अनुरोध से परेशान थे। वे सोचने लगे जो काम डीजीएम करने को कह रहे हैं (कि हज़ारों उपकरणों और अवयवों के सम्मिलित उत्पादन को बजट के पास लायाजाये) उसे कंप्यूटर द्वारा कैसे किया जा सकता है? मैन्युअल सिस्टम में यह सबचल रहा होगा, पर कंप्यूटर द्वारा यह हेरफेर करवाना उनकी समझ से परे था।

कोई आश्चर्य नहीं कि जब अधिग्रहित कंपनी के एक नए महाप्रबंधक ने शासनभार संभाला, तो अधिकारिओं को अपने पहले भाषण में ही उन्होंने कहा, "आप लोगों ने पहले ही इतना उत्पादन घोषित कर रखा है कि हमें वास्तविक और घोषित उत्पादन के बीच खाई भरने के लिए एक पूरे वर्ष को उत्पादन- अवकाश (production holiday) के रूप में घोषित करना होगा "।

डॉ कुमार सोच रहे थे त्वरित, जीवंत सूचना प्रणाली बनाने के लिए क्या क्या आवश्यक है ?